Tender Heart High School, Sector- 33-B Chandigarh

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - साहित्य सागर

पाठ-3 'महायज्ञ का पुरस्कार' (कहानी) लेखक-यशपाल

अतिरिक्त प्रश्न

निम्नलिखित अवतरणों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. "यह देखकर सेठ का हृदय दया से भर आया। बेचारे को कई दिन से खाना नहीं मिला दिखता है तभी तो यह हालत हो गई है।

प्रश्न (i) क्या देखकर सेठ का हृदय दया से भर आया ?

उत्तर- जब सेठ कुंदनपुर जा रहे थे तब आधा रास्ता पार करते-करते वे थक गए और उन्हें भूख भी लगने लगी थी। सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआँ देखकर सेठ ने विचार किया कि यहाँ थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए। यह सोच उन्होंने कुएँ से पानी खींचा मुँह और हाथ धोए और एक पेड़ के नीचे बैठकर खाने के लिए रोटी निकालकर और तोड़ने ही वाले थे कि क्या देखा कि निकट ही, हाथ भर की दूरी पर एक कुत्ता पड़ा छटपटा रहा था। बेचारे की मरणासन्न स्थिति थी। सेठ को रोटी खोलते देख बार-बार गर्दन उठाता, पर दुर्बलता के कारण उसकी गर्दन गिर जाती थी। यह देखकर सेठ का हृदय दया से भर आया।

प्रश्न (ii) सेठ कहाँ जा रहे थे और क्यों ?

उत्तर- एक सेठ थे, बहुत विनम्र और उदार तथा धर्मपरायण। उनके द्वार से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था, परन्तु एक समय ऐसा भी आया जब वे बहुत निर्धन हो गए। उन के संगी-साथियों ने मुँह मोड़ लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ और सेठानी भूखों मरने लगे।

उन दिन एक प्रथा प्रचलित थी। यज्ञों के फलों के क्रय-विक्रय का प्रचलन था। एक दिन गरीबी से तंग आकर सेठ की पत्नी ने

उन्हें अपना एक यज्ञ बेचने की सलाह दी। सेठ यह सुनकर दुःखी हो गए पर विवश होकर वे अपना एक यज्ञ बेचने को तैयार हो गए इसलिए वे अपना एक यज्ञ बेचने कुंदनपुर के धन्ना सेठ के पास जा रहे थे।

प्रश्न (iii) 'बेचारे' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है? उसकी दशा कैसी हो गई थी?

उत्तर - 'बेचारे' शब्द का प्रयोग कुएँ के पास पड़े भूखे कुत्ते के लिए किया गया है। उस कुत्ते ने न जाने कितने दिनों से खाना नहीं खाया था, इस कारण वह एकदम दुर्बल हो गया था। बेचारे का पेट कमर से लग गया था। उससे अपनी गर्दन भी नहीं उठाई जा रही थी। चलना-फिरना तो बहुत दूर, वह खड़ा भी नहीं हो सकता था।

प्रश्न (iv) सेठ ने क्या सोचकर उसे अपनी चौथी रोटी भी खिला दी?

उत्तर - सेठ ने भूखे कुत्ते पर दया करके एक के बाद एक तीन रोटियाँ उसे खिला दीं। तीन रोटियाँ खाने के बाद भी कुत्ता चलने-फिरने लायक न हुआ। जब एक बची रोटी सेठ खाने ही वाले थे कि वह कुत्ता सेठ को याचनाभरी आँखों से देखने लगा। सेठ का मन दया से भर आया, वे सोचने लगे मेरा काम तो पानी से भी चल सकता है। इस बेचारे मूक और बेबस जीव को एक रोटी और मिल जाए तो निश्चय ही इसमें इतनी ताकत आ जाएगी कि यह किसी बस्ती तक पहुँच सकेगा। सेठ ने इस बात पर अधिक सोच-विचार नहीं किया और अपने पास की चौथी एवं अंतिम रोटी भी कुत्ते को खिला दी।

(2) "देव की इस माया का रहस्य उनकी समझ में नहीं आया। दोनों निस्तब्ध खड़े थे।"

प्रश्न (i) देव की इस माया का रहस्य उनकी समझ में नहीं आया।' - इस वाक्य में 'उनकी' शब्द का प्रयोग किस-किस के लिए किया गया है? किस माया का रहस्य उनकी समझ में क्यों नहीं आया?

उत्तर - 'उनकी' शब्द का प्रयोग सेठ और सेठानी के लिए किया गया है। जब वे दोनों अपने घर के तहखाने की सीढ़ियों से उतरकर नीचे पहुँचे तो यह देखकर अवाक् रह गए कि तहखाना जवाहरातों से जगमगा रहा था। इस माया का रहस्य उनकी समझ में

नहीं आया कि आखिर ऐसा चमत्कार हुआ कैसे ?

प्रश्न (ii) किस वाणी को सुनकर वे कृतकृत्य हुए ?

उत्तर - अपने घर के तहखाने में से आती हुई अदृश्य दिव्य वाणी को सुनकर सेठ और सेठानी दोनों कृतकृत्य हुए उन्होंने वहीं धरती पर माथा टेक कर भगवान के चरणों को प्रणाम किया।

प्रश्न (iii) वह दिव्य वाणी क्या थी ?

उत्तर तहखाने में जवाहरातों को देखकर सेठ और सेठानी दोनों स्तब्ध रह गए। देव की इस माया का रहस्य उनकी समझ में नहीं आया। तभी अदृश्य किन्तु स्पष्ट स्वर में उन्हें सुनाई दिया - "ओ सेठ! स्वयं भूखे रहकर, अपना कर्त्तव्य मानकर प्रसन्नचित्त मन से तुमने मरणासन्न कुत्ते को चारों रोटियाँ खिलाकर उसकी जान बचाई, उस महायज्ञ का यह पुरस्कार है।

प्रश्न (iv) क्या यह उनके आदर्श और धर्मपरायणता का फल था ?

उत्तर - सेठ ने बहुत से यज्ञ किए और दान में न जाने कितना धन दीन-दुखियों में बाँट दिया था। उनकी धर्मपरायणता का ही ये फल था कि उन्हें अपने तहखाने में दबी हुई दौलत अनायास ही मिल गई और वे गरीब से फिर अमीर बन गए।

प्रश्न (v) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - कहानी का शीर्षक 'महायज्ञ का पुरस्कार' उपयुक्त है। सेठ का एक भूखे कुत्ते को चारों रोटियाँ खिला देना उसका एक बड़ा यज्ञ बन गया था। खुद भूखे रहकर उसने भूखे कुत्ते को चारों रोटियाँ खिलाकर उसके प्राणों की रक्षा की। यह उसका सबसे बड़ा पुण्य बन गया था। कुंदनपुर की सेठानी ने इसी 'महायज्ञ' को खरीदने का प्रस्ताव रखा। सेठ ने यह यज्ञ नहीं बेचा क्योंकि उस के विचार से किसी भूखे को खाना खिला देना कोई यज्ञ नहीं है, मानवीयता है और एक मानवोचित कर्त्तव्य है। लेकिन घर जाकर उन्हें एक बड़ा खज़ाना मिल गया जो उस महायज्ञ का पुरस्कार था।